الجزء ١٨

آيَاتُهَا ١١٨ ❀ سُوۡرَةُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ (٢٣) ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ٦

आयात 118 | (23) सूरतुल मोमिनून | रुकुआ़त 6

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ﴿١﴾ الَّذِيۡنَ هُمۡ فِيۡ صَلَاتِهِمۡ

अपनी नमाज़ों में	वह जो	1	मोमिन (जमा)	फ़लाह पाई (कामयाब हुए)

خٰشِعُوۡنَ ﴿٢﴾ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ ﴿٣﴾ وَالَّذِيۡنَ

और जो	3	मुँह फेरने वाले	लग़्व (बेहूदा बातों) से	वह	और जो	2	ख़ुशूअ़ (आजिज़ी) करने वाले

هُمۡ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوۡنَ ﴿٤﴾ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِفُرُوۡجِهِمۡ حٰفِظُوۡنَ ﴿٥﴾

5	हिफ़ाज़त करने वाले	अपनी शर्मगाहों की	वह	और जो	4	अदा करने वाले	ज़कात (को)	वह

اِلَّا عَلٰۤى اَزۡوَاجِهِمۡ اَوۡ مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَاِنَّهُمۡ غَيۡرُ مَلُوۡمِيۡنَ ﴿٦﴾

6	कोई मलामत नहीं	पस बेशक वह	उन के दाएं हाथ	जो मालिक हुए	या	अपनी बीवियां	पर- से	मगर

فَمَنِ ابۡتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡعٰدُوۡنَ ﴿٧﴾ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ

वह	और जो	7	हद से बढ़ने वाले	वह	तो वही	उस	सिवा	चाहे	पस जो

لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَعَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَلٰى صَلَوٰتِهِمۡ يُحَافِظُوۡنَ ﴿٩﴾

وقف لازم

9	हिफ़ाज़त करने वाले	अपनी नमाज़ें	पर- की	वह	और जो	8	देख भाल करने वाले	और अपने अ़हद	अपनी अमानतें

اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡوٰرِثُوۡنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيۡنَ يَرِثُوۡنَ الۡفِرۡدَوۡسَ هُمۡ فِيۡهَا

उस में	वह	जन्नत	वारिस होंगे	जो	10	वारिस (जमा)	वह	यही लोग

خٰلِدُوۡنَ ﴿١١﴾ وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ سُلٰلَةٍ مِّنۡ طِيۡنٍ ﴿١٢﴾

12	मिट्टी से	ख़ुलासा (चुनी हुई)	से	इन्सान	और अलबत्ता हम ने पैदा किया	11	हमेशा रहेंगे

ثُمَّ جَعَلۡنٰهُ نُطۡفَةً فِيۡ قَرَارٍ مَّكِيۡنٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقۡنَا النُّطۡفَةَ عَلَقَةً

जमा हुआ ख़ून	नुत्फ़ा	हम ने बनाया	फिर	13	मज़बूत जगह	में	नुत्फ़ा	हम ने उसे ठहराया	फिर

فَخَلَقۡنَا الۡعَلَقَةَ مُضۡغَةً فَخَلَقۡنَا الۡمُضۡغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوۡنَا الۡعِظٰمَ

हड्डियां	फिर हम ने पहनाया	हड्डियां	बोटी	फिर हम ने बनाया	बोटी	जमा हुआ ख़ून	पस हम ने बनाया

لَحۡمًا ثُمَّ اَنۡشَاۡنٰهُ خَلۡقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ ﴿١٤﴾

14	पैदा करने वाला	बेहतरीन	अल्लाह	पस बरकत वाला	नई	सूरत	हम ने उसे उठाया	फिर	गोश्त

ثُمَّ اِنَّكُمۡ بَعۡدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوۡنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ تُبۡعَثُوۡنَ ﴿١٦﴾

16	उठाए जाओगे	रोज़े क़ियामत	बेशक तुम	फिर	15	ज़रूर मरने वाले	उस के बाद	बेशक तुम	फिर

وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا فَوۡقَكُمۡ سَبۡعَ طَرَآئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الۡخَلۡقِ غٰفِلِيۡنَ ﴿١٧﴾

17	ग़ाफ़िल	ख़ल्क़ (पैदाइश)	से	और हम नहीं	रास्ते	सात	तुम्हारे ऊपर	और तहक़ीक़ हम ने बनाए

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

(दो जहान में) कामयाब हुए वह मोमिन। (1)
जो अपनी नमाज़ों में आजिज़ी करने वाले हैं। (2)
और वह जो बेहूदा बातों से मुँह फेरने वाले हैं। (3)
और वह जो ज़कात अदा करने वाले हैं। (4)
और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (5)
मगर अपनी बीवियों से या जिन के मालिक हुए उन के दाएं हाथ (कनीज़ों) से, बेशक उन पर कोई मलामत नहीं। (6)
पस जो उन के सिवा चाहे तो वही हैं हद से बढ़ने वाले। (7)
और (कामयाब हैं वह मोमिन) वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद का पास रखते हैं। (8)
और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (9)
यही लोग हैं जो वारिस होंगे। (10)
(जन्नत) फ़िरदौस के, वह उस में हमेशा रहेंगे। (11)
और अलबत्ता हम ने इन्सान को चुनी हुई मिट्टी से पैदा किया। (12)
फिर हम ने उसे मज़बूत जगह में नुत्फ़ा ठहराया। (13)
फिर हम ने नुत्फ़े को जमा हुआ ख़ून बनाया, फिर हम ने बनाया जमे हुए ख़ून (लोथड़े) को बोटी, फिर हम ने बोटी से हड्डियां बनाईं, फिर हम ने हड्डियों को गोश्त पहनाया, फिर हम ने उसे नई सूरत में उठा कर खड़ा किया, पस अल्लाह बाबरकत है बेहतरीन पैदा करने वाला। (14)
फिर बेशक उस के बाद तुम ज़रूर मरने वाले हो। (15)
फिर बेशक तुम रोज़े क़ियामत उठाए जाओगे। (16)
और तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे ऊपर बनाए सात रास्ते और हम पैदाइश से ग़ाफ़िल नहीं। (17)

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى

पर	और बेशक हम	ज़मीन में	हम ने उसे ठहराया	अन्दाज़े के साथ	पानी	आस्मानों से	और हम ने उतारा

ذَهَابٍۭ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

खजूर (जमा)	से-के	बाग़ात	उस से	तुम्हारे लिए	पस हम ने पैदा किए	18	अलबत्ता क़ादिर	उस का	ले जाना

وَّاَعْنَابٍ ۙ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً

और दरख़्त	19	तुम खाते हो	और उस से	बहुत	मेवे	उस में	तुम्हारे लिए	और अंगूर (जमा)

وقف لازم

تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	खाने वालों के लिए	और सालन	तेल के साथ-लिए	उगता है	तूरे सीना	से	निकलता है

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا

उन में	और तुम्हारे लिए	उन के पेटों में	उस से जो	हम तुम्हें पिलाते हैं	इब्रत-ग़ौर का मुक़ाम	चौपायों में	तुम्हारे लिए	और बेशक

ع ١ ٢٢ ١

مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

22	सवार किए जाते हो	और कश्ती पर	और उन पर	21	तुम खाते हो	और उन से	बहुत	फ़ाइदे

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

तुम्हारे लिए नहीं	तुम अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ)	और अलबत्ता हम ने भेजा

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۖ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ

उस की क़ौम	से-के	जिन्हों ने कुफ़्र किया	सरदार	तो वह बोले	23	क्या तो तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद

مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

अल्लाह चाहता	और अगर	तुम पर	कि बड़ा बन बैठे वह	वह चाहता है	तुम जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं

لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِنْ هُوَ

नहीं वह-यह	24	पहले	अपने बाप दादा से	यह	नहीं सुना हम ने	फ़रिश्ते	तो उतारता

اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ

मेरी मदद फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	25	एक मुद्दत तक	उस का	सो तुम इन्तिज़ार करो	जुनून	जिस को	एक आदमी	मगर

بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا

हमारी आँखों के सामने	कश्ती	तुम बनाओ	कि	उस की तरफ़	तो हम ने वहि भेजी	26	उन्हों ने मुझे झुटलाया	उस पर

وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ

हर (क़िस्म) से	उस में	तो चला ले (रख ले)	और तन्नूर उबलने लगे	हमारा हुक्म	आजाए	फिर जब	और हमारा हुक्म

زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ

हुक्म	उस पर	पहले हो चुका	जो-जिस	सिवा	और अपने घर वाले	दो	जोड़ा

مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	ग़र्क़ किए जाने वाले	बेशक वह	वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया	में-बारे में	और न करना मुझ से बात	उन में से

और हम ने आस्मानों से पानी उतारा एक अन्दाज़े के साथ, फिर उस को हम ने ज़मीन में ठहराया, और बेशक हम उस को ले जाने पर (भी) क़ादिर हैं। (18)
पस हम ने पैदा किए उस से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ात, तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे हैं, और उस से तुम खाते हो। (19)
और दरख़्त (ज़ैतून) जो तूरे सीना से निकलता है, वह उगता है तेल और सालन लिए हुए खाने वालों के लिए। (20)
और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में मुक़ामे इब्रत है, हम तुम्हें उन से पिलाते हैं (दूध) जो उन के पेटों में है, और तुम्हारे लिए उन में (और) बहुत से फ़ाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। (21)
और उन पर और कश्ती पर सवार किए जाते हो। (22)
और अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारे लिए कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (23)
तो उस की क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया, बोले यह (कुछ भी) नहीं मगर तुम जैसा एक बशर है, वह चाहता है कि तुम पर बड़ा बन बैठे, और अगर अल्लाह चाहता तो उतारता फ़रिश्ते, हम ने अपने पहले बाप दादा से यह (कभी) नहीं सुना। (24)
वह (कुछ भी) नहीं मगर एक आदमी है जिस को जुनून हो गया है, सो तुम उस का एक मुद्दत तक इन्तिज़ार करो। (25)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा उस पर कि उन्हों ने मुझे झुटलाया। (26)
तो हम ने वही भेजी उस की तरफ़ कि हमारी आँखों के सामने हमारे हुक्म से कश्ती बनाओ, फिर जब हमारा हुक्म आए और तन्नूर उबलने लगे, तो उस (कश्ती) में हर क़िस्म के जोड़ों में से दो (एक नर एक मादा) रख लो और अपने घर वाले (भी सवार कर लो) उस के सिवा (जिस के ग़र्क़ होने पर) हुक्म हो चुका है उन में से, और मुझ से उन के बारे में बात न करना जिन्हों ने ज़ुल्म किया है, बेशक वह ग़र्क़ किए जाने वाले हैं। (27)

فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	तो कहना	कश्ती	पर	तेरे साथ (साथी)	और जो	तुम	बैठ जाओ	फिर जब

الَّذِىْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا

मुबारक	मन्ज़िल	मुझे उतार	ऐ मेरे रब	और कहो	28	ज़ालिम (जमा)	क़ौम	से	हमें नजात दी	वह जिस ने

وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	आज़माइश करने वाले	और बेशक हम हैं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	29	उतारने वाले	बेहतरीन	और तू

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا

रसूल (जमा)	उन के दरमियान	फिर भेजे हम ने	31	दूसरा	गिरोह	उन के बाद	हम ने पैदा किया	फिर

٢ ع ١٠ ٢
مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ

और कहा	32	क्या फिर तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं तुम्हारे लिए	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उन में से

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ

और हम ने उन्हें ऐश दिया	आख़िरत	हाज़िरी को	और झुटलाया	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	उस की क़ौम के	सरदारों

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ

उस से	तुम खाते हो	उस से जो	वह खाता है	तुम्हीं जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं	दुनिया की ज़िन्दगी	में

وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ اِنَّكُمْ اِذًا

उस वक़्त	बेशक तुम	अपने जैसा	एक बशर	तुम ने इताअ़त की	और अगर	33	तुम पीते हो	उस से जो	और पीता है

لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ

तो तुम	और हडि्डयां	मिट्टी	और तुम हो गए	मर गए	जब	कि तुम	क्या वह वादा देता है तुम्हें	34	घाटे में रहोगे

مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِىَ اِلَّا

मगर	नहीं	36	तुम्हें वादा दिया जाता है	वह जो	बईद है	बईद है	35	निकाले जाओगे

حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ هُوَ

वह	नहीं	37	फिर उठाए जाने वाले	हम	और नहीं	और हम जीते हैं	और हम मरते हैं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी

اِلَّا رَجُلُ اِۨفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ

उस ने अर्ज़ किया	38	ईमान लाने वाले	उस पर	हम	और नहीं	झूट	अल्लाह पर	उस ने झूट बान्धा	एक आदमी	मगर

رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

40	पछताने वाले	वह ज़रूर रह जाएंगे	बहुत जल्द	उस ने फ़रमाया	39	उन्हों ने मुझे झुटलाया	उस पर जो	मेरी मदद फ़रमा	मेरे रब

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ

क़ौम के लिए	दूरी (मार)	ख़स ओ ख़ाशाक	सो हम ने उन्हें कर दिया	(वादाए) हक़ के मुताबिक़	चिंघाड़	पस उन्हें आ पकड़ा

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾

42	दूसरी - और उम्मतें	उन के बाद	हम ने पैदा की	फिर	41	ज़ालिम (जमा)

फिर तुम जब बैठ जाओ कश्ती पर तुम और तेरे साथी, तो कहना तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं वह जिस ने हमें नजात दी ज़ालिमों की क़ौम से। (28) और कहो ऐ मेरे रब! मुझे मुबारक मन्ज़िल (जगह) पर उतार, और तू बेहतरीन उतारने वाला है। (29) बेशक उस में अलबत्ता निशानियां हैं, और बेशक हम आज़माइश करने वाले हैं। (30) फिर हम ने उन के बाद पैदा किया दूसरी पीढ़ी। (31) फिर हम ने उन के दरमियान उन्हीं में से रसूल भेजे कि तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर क्या तुम डरते नहीं? (32) और उस की क़ौम के उन सरदारों ने कहा जिन्हों ने कुफ़्र किया और आख़िरत की हाज़री को झुटलाया, और हम ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश दिया था, यह नहीं है मगर तुम्हीं जैसा एक बशर है, वह उसी में से खाता है जो तुम खाते हो, और उसी में से पीता है जो तुम पीते हो। (33) और अगर तुम ने अपने जैसे एक बशर की इताअ़त की, तो बेशक तुम उस वक़्त घाटे में रहोगे। (34) क्या वह तुम्हें वादा देता है कि जब तुम मर गए और तुम मिट्टी और हडि्डयां हो गए तो तुम (फिर) निकाले जाओगे। (35) बईद है बईद है, वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है। (36) (और कुछ) नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हम नहीं हैं फिर उठाए जाने वाले। (37) वह (कुछ) नहीं मगर एक आदमी है, उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है और हम नहीं हैं उस पर ईमान लाने वाले। (38) उस ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! तू उस पर मेरी मदद फ़रमा कि उन्हों ने मुझे झुटलाया। (39) उस ने फ़रमाया वह बहुत जल्द ज़रूर पछताते रह जाएंगे। (40) पस उन्हें चिंघाड़ ने वादाए हक़ के मुताबिक़ आ पकड़ा, सो हम ने उन्हें ख़स ओ ख़ाशाक की तरह कर दिया, पस मार हो ज़ालिमों की क़ौम के लिए। (41) फिर हम ने उन के बाद और उम्मतें पैदा कीं। (42)

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ أَرْسَلْنَا

हम ने भेजे	फिर	43	पीछे रह जाती है	और न	अपनी मीआ़द	कोई उम्मत	सबक़त करती है	नहीं

رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رَسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ

उन में से एक	तो हम पीछे लाए	उन्हों ने उसे झुटलाया	उस का रसूल	किसी उम्मत में	आया	जब भी	पै दर पै	रसूल (जमा)

بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

44	जो ईमान नहीं लाए	लोगों के लिए	सो दूरी (मार)	अफ़्साने	और उन्हें बना दिया हम ने	दूसरे

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ ۙ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾

45	खुले	और दलाइल	साथ (हमारी) अपनी निशानियां	हारून (अ)	और उन का भाई	मूसा (अ)	हम ने भेजा	फिर

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوا

पस उन्हों ने कहा	46	सरकश	लोग	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	और उस के सरदार	फ़िरऔन	तरफ़

أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَابِدُونَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوهُمَا

पस उन्हों ने झुटलाया दोनो को	47	बन्दगी (ख़िदमत) करने वाले	हमारी	और उनकी क़ौम	अपने जैसे	दो (2) आदमियों पर	क्या हम ईमान ले आएं

فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ

ताकि वह लोग	किताब	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी	48	हलाक होने वाले	से	तो वह हो गए

يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ

तरफ़ (पर)	और हम ने उन्हें ठिकाना दिया	एक निशानी	और उस की माँ	मरयम का बेटा (ईसा अ)	और हम ने बनाया	49	हिदायत पा लें

رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾ يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ ع ١٨ ٣

पाकीज़ा चीज़ें	से	खाओ	रसूल (जमा)	ऐ	50	और बहता हुआ पानी	ठहरने का मुक़ाम	एक बुलन्द टीला

وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾ وَإِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ

तुम्हारी उम्मत	यह	और बेशक	51	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	बेशक मैं	नेक	और अ़मल करो

أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ

टुकड़े टुकड़े	आपस में	अपना काम	फिर उन्हों ने काट लिया	52	पस मुझ से डरो	तुम्हारा रब	और मैं	एक उम्मत, उम्मते वाहिदा

كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِي غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ

तक	उन की ग़फ़्लत में	पस छोड़ दे उन्हें	53	ख़ुश	उन के पास	उस पर जो	हर गिरोह

حِينٍ ﴿٥٤﴾ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ

हम जल्दी कर रहे हैं	55	और औलाद	माल	से	उस के साथ	हम मदद कर रहे हैं उन की	कि जो कुछ	क्या वह गुमान करते हैं	54	एक मुद्दत मुक़र्रर

لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ

डर	से	वह	जो लोग	बेशक	56	वह शऊर (समझ) नहीं रखते	बल्कि	भलाई में	उन के लिए

رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

58	ईमान रखते हैं	अपना रब	आयतों पर	वह	और जो लोग	57	डरने वाले (सहमे हुए)	अपना रब

कोई उम्मत अपनी (मुक़र्रर) मीआ़द से न सबक़त करती है और न पीछे रह जाती है। (43)
फिर हम ने भेजे रसूल पै दर पै, जब भी किसी उम्मत में उस का रसूल आया उन्हों ने उसे झुटलाया, तो हम (हलाक करने के लिए) पीछे लाए उन में से एक को दूसरे के, और हम ने उन्हें अफ़्साने (भूली बिसरी बातें) बनाया, सो (अल्लाह की) मार उन लोगों के लिए जो ईमान नहीं लाए। (44)
फिर हम ने भेजा मूसा (अ) और उन के भाई हारून (अ) को अपनी निशानियों और खुले दलाइल के साथ। (45)
फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह सरकश लोग थे। (46)
पस उन्हों ने कहा क्या हम अपने जैसे (उन) दो आदमियों पर ईमान ले आएं? और उन की क़ौम (के लोग) हमारी ख़िद्मत करने वाले। (47)
पस उन्हों ने दोनों को झुटलाया तो वह हलाक होने वालों में से हो गए। (48)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को दी किताब ताकि वह लोग हिदायत पा लें। (49)
और हम ने मरयम (अ) के बेटे (इसा अ) और उस की माँ को एक निशानी बनाया और हम ने उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द टीले पर जो ठहरने का मुक़ाम और जारी पानी की (शादाब) जगह थी। (50)
ऐ रसूलो! तुम पाक चीज़ों में से खाओ और अ़मल करो नेक, बेशक जो तुम करते हो मैं उसे जानने वाला हूँ (जानता हूँ)। (51)
और बेशक यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मते वाहिदा है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मुझ से डरो। (52)
फिर उन्हों ने आपस में अपना काम टुकड़े टुकड़े काट लिया, (फिर) हर गिरोह वाले उस पर जो उन के पास है ख़ुश हैं। (53)
पस उन्हें उन की ग़फ़्लत में एक मुद्दते मुक़र्रर तक छोड़ दे। (54)
क्या वह गुमान करते हैं? कि हम जो कुछ उन की मदद कर रहे हैं माल और औलाद के साथ। (55)
हम उन के लिए भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं) बल्कि वह समझ नहीं रखते। (56)
बेशक जो लोग अपने रब के डर से सहमे हुए हैं। (57)
और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58)

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا

जो वह देते हैं	देते हैं	और जो लोग	59	शरीक नहीं करते	अपने रब के साथ	वह	और जो लोग

وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ

जल्दी करते हैं	यही लोग	60	लौटने वाले	अपना रब	तरफ़	कि वह	डरते हैं	और उन के दिल

فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا

उस की ताक़त के मुताबिक़	मगर	किसी को	और हम तक्लीफ़ नहीं देते	61	सबक़त ले जाने वाले हैं	उन की तरफ़	और वह	भलाइयों में

وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ

उन के दिल	बल्कि	62	जुल्म न किए जाएंगे (जुल्म न होगा)	और वह (उन)	ठीक ठीक	वह बतलाता है	एक किताब (रजिस्टर)	और हमारे पास

فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	करते रहते हैं	वह उन्हें	उस	अ़लावा	आमाल (जमा)	और उन के	उस से	ग़फ़्लत

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْـَٔرُوا

तुम फ़र्याद न करो	64	फ़र्याद करने लगे	उस वक़्त वह	अ़ज़ाब में	उन के खुशहाल लोग	हम ने पकड़ा	यहां तक कि जब

الْيَوْمَ ۖ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ

तो तुम थे	तुम पर	पढ़ी जाती थीं	मेरी आयतें	अलबत्ता तुम्हें	65	तुम मदद न दिए जाओगे	हम से	बेशक तुम	आज

عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	बेहूदा बकवास करते हुए	अफ़्साना गोई करते हुए	उस के साथ	तकब्बुर करते हुए	66	फिर जाते	अपनी एड़ियों के बल

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	पहले	उन के बाप दादा	नहीं आया	जो	उन के पास आया	या	कलाम	पस क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ

दीवानगी	उस को	वह कहते हैं	या	69	मुन्किर हैं	उस के	तो वह	अपने रसूल	उन्हों ने नहीं पहचाना	या

بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ

उन की ख़ाहिशात	हक़ (अल्लाह)	पैरवी करता	और अगर	70	नफ़्रत रखने वाले	हक़ से	और उन में से अक्सर	साथ हक़ बात	वह आया उन के पास	बल्कि

لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ

फिर वह	उन की नसीहत	हम लाए हैं उन के पास	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	अलबत्ता दरहम बरहम हो जाता

عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ

बेहतर	तुम्हारा रब	तो अजर	अजर	क्या तुम उन से मांगते हो	71	रूगर्दानी करने वाले हैं	अपनी नसीहत से

وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾

73	सीधा रास्ता	तरफ़	उन्हें बुलाते हो	और बेशक तुम	72	बेहतरीन रोज़ी दहिन्दा है	और वह

وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	अलबत्ता हटे हुए हैं	राहे हक़	से	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	और बेशक

और जो लोग अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। (59)
और जो लोग देते हैं जो कुछ वह देते हैं और उन के दिल डरते हैं कि वह अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (60)
यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वह उन की तरफ़ सबक़त ले जाने वाले हैं। (61)
और हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते मगर उस की ताक़त के मुताबिक़, और हमारे पास (आमाल का) एक रजिस्टर है जो ठीक ठीक बतलाता है और उन पर ज़ुल्म न होगा। (62)
बल्कि उन के दिल इस (हक़ीक़त) से ग़फ़्लत में हैं और उन के (बुरे) आ़माल उस के आलावा जो वह करते रहते हैं। (63)
यहां तक कि जब हम ने उन के खुशहाल लोगों को पकड़ा अ़ज़ाब में, तो उस वक़्त वह फ़र्याद करने लगे। (64)
आज फ़र्याद न करो तुम, हमारी (तरफ़) से मदद न दिए जाओगे (मुत्लक़ मदद न पाओगे)। (65)
अलबत्ता तुम पर मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल (उलटे) फिर जाते थे। (66)
तकब्बुर करते हुए, उस के साथ अफ़्साना गोई और बेहूदा बकवास करते हुए। (67)
पस क्या उन्हों ने (इस) कलामे (हक़) पर ग़ौर नहीं क्या? या उन के पास वह आया जो नहीं आया था उन के पहले बाप दादा (बड़ों) के पास। (68)
या उन्हों ने अपने रसूल को नहीं पहचाना तो इस लिए उस के मुन्किर हैं। (69)
या वह कहते हैं उस को दीवानगी है? बल्कि वह उन के पास हक़ बात के साथ आया है और उन में से अक्सर हक़ बात से नफ़्रत रखने वाले हैं। (70)
और अगर अल्लाह तआ़ला उन की ख़ाहिशात की पैरवी करता तो अलबत्ता ज़मीन ओ आस्मान और जो कुछ उन के दरमियान है दरहम बरहम हो जाते, बल्कि हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं फिर वह अपनी नसीहत (की बात से) रूगर्दानी कर रहे हैं। (71)
क्या तुम उन से अजर मांगते हो? तो तुम्हारे रब का अजर बेहतर है, और वह बेहतर रोज़ी दहिन्दा है। (72)
और बेशक तुम उन्हें बुलाते हो राहे रास्त की तरफ़। (73)
और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, बेशक वह राहे हक़ से हटे हुए हैं। (74)

और अगर हम उन पर रहम करें,
और जो उन पर तक्लीफ़ है वह
दूर कर दें तो वह अपनी सरकशी
पर अड़े रहें, भटकते फिरें। (75)
और अलबत्ता हम ने उन्हें
अज़ाब में पकड़ा, फिर न उन्हों
ने आजिज़ी की, और न वह
गिड़गिड़ाए। (76)
यहां तक कि जब हम ने उन पर सख़्त
अज़ाब के दरवाज़े खोल दिए तो उस
वक़्त वह उस में मायूस हो गए। (77)
और वही है जिस ने तुम्हारे लिए
कान और आँखें और दिल बनाए, तुम
बहुत ही कम शुक्र करते हो। (78)
और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में
फैलाया, और उसी की तरफ़ तुम
जमा हो कर जाओगे। (79)
और वही है जो ज़िन्दा करता है
और मारता है, और उसी के लिए
है रात और दिन का आना जाना,
पस क्या तुम समझते नहीं? (80)
बल्कि उन्हों ने (वही) कहा जैसे (उन
से) पहले (काफ़िर) कहते थे। (81)
वह बोले, क्या जब हम मर गए, और
हम मिट्टी और हडिड्यां हो गए, क्या
हम फिर (दोबारा) उठाए जाएंगे? (82)
अलबत्ता हम से वादा किया गया
और इस से क़ब्ल हमारे बाप दादा से
यह (वादा किया गया), यह तो सिर्फ़
पहले लोगो की कहानियां हैं। (83)
आप (स) फ़रमां दें किस के लिए
हैं ज़मीन और जो कुछ उस में है?
अगर तुम जानते हो। (84)
वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह के लिए
हैं, आप (स) फ़रमां दें पस क्या
तुम ग़ौर नहीं करते? (85)
आप (स) फ़रमां दें कौन है सात
आस्मानों का रब और अर्श अज़ीम
का रब? (86)
वह ज़रूर कहेंगे (यह सब) अल्लाह
का है, आप (स) फ़रमां दें पस क्या
तुम नहीं डरते? (87)
आप (स) फ़रमा दें किस के हाथ
में है हर चीज़ का इख़्तियार?
और वह पनाह देता है और उस
के ख़िलाफ़ (कोई) पनाह नहीं दिया
जाता अगर तुम जानते हो। (88)
वह ज़रूर कहेंगे (हर इख़्तियार) अल्लाह
के लिए, आप (स) फ़रमां दें फिर तुम
कहां से जादू में फँस गए हो। (89)

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

अपनी सरकशी	में - पर	अड़े रहें	जो तक्लीफ़	जो उन पर	और हम दूर कर दें	हम उन पर रहम करें	और अगर

يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	फिर उन्हों ने आजिज़ी न की	अज़ाब में	और अलबत्ता हम ने उन्हें पकड़ा	75	भटकते रहें

وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ

सख़्त	अज़ाब वाला	दरवाज़ा	उन पर	हम ने खोल दिया	जब	यहां तक कि	76	और वह न गिड़गिड़ाए

اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ ع ٤ ٢٧

और आँखें	कान	बनाए तुम्हारे लिए	जिस ने	और वह	77	मायूस हुए	उस में	तो उस वक़्त वह

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ

फैलाया तुम्हें	वही जिस ने	और वह	78	जो तुम शुक्र करते हो	बहुत ही कम	और दिल (जमा)

فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ

और मारता है	ज़िन्दा करता है	वही जो	और वह	79	तुम जमा हो कर जाओगे	और उस की तरफ़	ज़मीन में

وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا

बल्कि उन्हों ने कहा	80	क्या पस तुम समझते नहीं?	और दिन	रात	आना जाना	और उसी के लिए

مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾ قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

और हम हो गए मिट्टी	हम मर गए	क्या जब	वह बोले	81	पहलों ने	जो कहा	जैसे

وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا

यह	और हमारे बाप दादा	हम	अलबत्ता हम से वादा किया गया	82	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां

مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ

ज़मीन	किस के लिए	फ़रमा दें	83	पहले लोग	कहानियां	मगर (सिर्फ़)	यह नहीं	इस से क़ब्ल

وَمَنْ فِيْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ

फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह के लिए	84	तुम जानते हो	अगर	उस में	और जो

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ

और रब	सात	आस्मान (जमा)	रब	कौन	फ़रमा दें	85	क्या पस तुम ग़ौर नहीं करते?

الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْۢ

कौन	फ़रमा दें	87	क्या पस तुम नहीं डरते?	फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह का	86	अर्श अज़ीम

بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ

अगर	उस के ख़िलाफ़	और पनाह नहीं दिया जाता	पनाह देता है	और वह	हर चीज़	बादशाहत (इख़्तियार)	उस के हाथ में

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	तुम जादू में फँस गए हो	फिर कहां से	फ़रमा दें	जल्दी कहेंगे अल्लाह के लिए	88	तुम जानते हो

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ

नहीं अपनाया अल्लाह	90	अलबत्ता झूटे हैं	और बेशक वह	सच्ची बात	हम लाए हैं उन के पास	बल्कि

مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ

जो उस ने पैदा किया	माबूद	हर	ले जाता	उस सूरत में	कोई और माबूद	उस के साथ	और नहीं है	किसी को बेटा

وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾

91	वह बयान करते हैं	उस से जो	पाक है अल्लाह	दूसरे पर	उन का एक	और चढ़ाई करता

ع ١٥ ٥ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ

ऐ मेरे रब	फ़रमा दें	92	वह शरीक समझते हैं	उस से जो	पस बरतर	और आशकारा	जानने वाला पोशीदा

اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي

में	पस तू मुझे न करना	ऐ मेरे रब	93	जो उन से वादा किया जाता है	अगर तू मुझे दिखा दे

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	अलबत्ता क़ादिर हैं	जो हम वादा कर रहे हैं उन से	कि हम तुम्हें दिखा दें	पर	और बेशक हम	94	ज़ालिम लोग

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	वह बयान करते हैं	उस को जो	खूब जानते हैं	हम	बुराई	सब से अच्छी भलाई	वह	उस से जो	दफ़्अ़ करो

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ

तेरी	और मैं पनाह चाहता हूँ	97	शैतान (जमा)	वस्वसे से	से	तेरी	मैं पनाह चाहता हूँ	ऐ मेरे रब	और आप (स) फ़रमा दें

رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	कहता है	मौत	उन में किसी को	जब आए	यहां तक कि	98	कि वह आएं मेरे पास	ऐ मेरे रब

ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ

वह	एक बात	यह तो	हरगिज़ नहीं	मैं छोड़ आया हूँ	उस में	कोई अच्छा काम	काम कर लूँ	शायद मैं	99	मुझे वापस भेज दे

قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ

फूंका जाएगा	फिर जब	100	वह उठाए जाएंगे	उस दिन तक	एक बरज़ख़	और उन के आगे	कह रहा है

فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

101	और न वह एक दूसरे को पूछेंगे	उस दिन	उन के दरमियान	तो न रिश्ते	सूर में

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ

हल्का हुआ	और जो	102	फ़लाह पाने वाले	वह	पस वह लोग	उस का तोल (पल्ला)	भारी हुई	पस-जो-जिस

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ

जहन्नम में	अपनी जानें	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	तो वही लोग	उस का तोल (पल्ला)

خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

104	तेवरी चढ़ाए हुए	उस में	और वह	आग	उन के चेहरे	झुलस देगी	103	हमेशा रहेंगे

बल्कि हम उन के पास लाए हैं सच्ची बात, और बेशक वह झूटे हैं। (90)
अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा नहीं बनाया, और नहीं है उस के साथ कोई और माबूद, उस सूरत में हर माबूद ले जाता जो उस ने पैदा किया होता, और उन में से एक दूसरे पर चढ़ाई करता, पाक है अल्लाह उन (बातों) से जो वह बयान करते हैं। (91)
वह जानने वाला है पोशीदा और आशकारा, पस बरतर है (वह हर) उस से जिस को वह शरीक समझते हैं। (92)
आप (स) सफ़रमां दें ऐ मेरे रब! जो उन से वादा किया जाता है अगर तू मुझे दिखादे। (93)
ऐ मेरे रब! पस तू मुझे ज़ालिम लोगो में (शामील) न करना। (94)
और बेशक हम उस पर क़ादिर हैं कि हम उन से जो वादा कर रहे हैं तुम्हें दिखा दें। (95)
सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़्अ़ करो, हम खूब जानते हैं जो वह बयान करते हैं। (96)
और आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ शैतानों के वस्वसों से। (97)
और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वह मेरे पास आएं। (98)
(वह ग़फ़्लत में रहते हैं) यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहता है ऐ मेरे रब! मुझे (फिर दुनिया में) वापस भेज दे। (99)
शायद मैं उस में कोई अच्छा काम कर लूँ जो छोड़ आया हूँ, हरगिज़ नहीं, यह तो एक बात है जो वह कह रहा है, और उन के आगे एक बरज़ख़ (आड़) है उस दिन (क़ियामत) तक कि वह उठाए जाएं। (100)
फिर जब सूर फूंका जाएगा तो न रिश्ते रहेंगे उस दिन उन के दरमियान, और न कोई एक दूसरे को पूछेगा। (101)
पस जिस (के आमाल) का पल्ला भारी हुआ पस वही लोग फ़लाह (नजात) पाने वाले होंगे। (102)
और जिस (के आमाल) का पल्ला हल्का हुआ तो वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को ख़सारे में डाला, वह जहन्नम में हमेशा रहेंगे। (103)
आग उन के चेहरे झुलस देगी और वह उस में तेवरी चढ़ाए हुए होंगे। (104)

اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوْا

वह कहेंगे	105	तुम झुटलाते थे	उन्हें	पस तुम थे	तुम पर	पढ़ी जातीं	मेरी आयतें	क्या न थी

رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَآ

ऐ हमारे रब	106	रास्ते से भटके हुए	लोग	और हम थे	हमारी बद बख़्ती	हम पर	ग़ालिब आ गई	ऐ हमारे रब

اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا

उस में	फिटकारे हुए पड़े रहो	फ़रमाएगा	107	ज़ालिम (जमा)	तो बेशक हम	दोबारा किया	फिर अगर	इस से	हमें निकाल ले

وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ

वह कहते थे	हमारे बन्दों का	एक गिरोह	था	बेशक वह	108	और कलाम न करो मुझ से

رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

109	रहम करने वाले	बेहतरीन	और तू	और हम पर रहम फ़रमा	सो हमें बख़्शदे	हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब

فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ

उन से	और तुम थे	मेरी याद	उन्हों ने भुला दिया तुम्हें	यहां तक कि	मज़ाक़	पस तुम ने उन्हें बना लिया

تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ

वही	बेशक वह	उन्हों ने सब्र किया	उस के बदले	आज	मैं ने जज़ा दी उन्हें	बेशक मैं	110	हँसी किया करते

الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

112	साल (जमा)	शुमार (हिसाब)	ज़मीन (दुनिया) में	कितनी मुद्दत रहे तुम	फ़रमाएगा	111	मुराद को पहुँचने वाले

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾

113	शुमार करने वाले	पस पूछ लें	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	वह कहेंगे

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾

114	जानते होते	तुम	काश	थोड़ा (अर्सा)	मगर (सिर्फ़)	नहीं तुम रहे	फ़रमाएगा

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾

115	नहीं लौटाए जाओगे	हमारी तरफ़	और यह कि तुम	(अब्स) बेकार	हम ने तुम्हें पैदा किया	कि	क्या तुम ख़याल करते हो

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ

मालिक	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हक़ीक़ी	बादशाह	अल्लाह	पस बुलन्द तर

الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ

नहीं कोई सनद	कोई और माबूद	अल्लाह के साथ	और जो पुकारे	116	इज़्ज़त वाला अर्श

لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

117	काफ़िर (जमा)	फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे	बेशक वह	उस के रब के पास	उसका हिसाब	सो, तहक़ीक	उस के लिए	उस के पास

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾ ع ٦ ٦

118	बेहतरीन रहम करने वाला है	और तू	और रहम फ़रमा	बख़्शदे	ऐ मेरे रब	और आप (स) कहें

क्या मेरी आयतें तुम पर न पढ़ी जाती (सुनाई जाती) थीं? पस तुम उन्हें झुटलाते थे। (105)

वह कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आ गई, और हम रास्ते से भटके हुए लोग थे। (106)

ऐ हमारे रब! हमें इस से निकाल ले, फिर अगर हम ने दोबारा (वही) किया तो बेशक हम ज़ालिम होंगे। (107)

वह फ़रमाएगा फिटकारे हुए उस में पड़े रहो और मुझ से कलाम न करो। (108)

बेशक हमारे बन्दों का एक गिरोह था, वह कहते थे ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, सो हमें बख़्शदे, और हम पर रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (109)

पस तुम ने उन्हें बना लिया मज़ाक़, यहां तक कि उन्हों ने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उन से हँसी किया करते थे। (110)

बेशक मैं ने आज उन्हें जज़ा दी उस के बदले कि उन्हों ने सब्र किया, बेशक वही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (111)

(अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा तुम कितनी मुद्दत रहे दुनिया में सालों के हिसाब से? (112)

वह कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा रहे, पस पूछ लें शुमार करने वालों से। (113)

फ़रमाएगा तुम सिर्फ़ थोड़ा अर्सा रहे, काश कि तुम (यह हक़ीक़त दुनिया में) जानते होते। (114)

क्या तुम ख़याल करते हो कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया? और यह कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाओगे? (115)

पस बुलन्द तर है अल्लाह हक़ीक़ी बादशाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, इज़्ज़त वाला अ़र्श का मालिक। (116)

और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ कोई और माबूद, उस के पास उस के लिए कोई सनद नहीं, सो उस का हिसाब उस के रब के पास है, बेशक कामयाबी नहीं पाएंगे काफ़िर। (117)

और आप (स) कहें, ऐ मेरे रब! बख़्शदे और रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (118)

آيَاتُهَا ٦٤ ❀ (٢٤) سُوْرَةُ النُّوْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9	(24) सूरतुन नूर रोशनी	आयात 64

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ

ताकि तुम	वाज़ेह आयतें	उस में	और हम ने नाज़िल की	और लाज़िम किया उस को	जो हम ने नाज़िल की	एक सूरत

تَذَكَّرُوْنَ ۝١ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

उन दोनो में से	हर एक को	तो तुम कोड़े मारो	और बदकार मर्द	बदकार औरत	1	तुम याद रखो

مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह का हुक्म	में	मेहरबानी (तरस)	उन पर	और न पकड़ो (न खाओ)	कोड़े	सौ (100)

كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ

एक जमाअत	उन की सज़ा	और चाहिए कि मौजूद हो	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۡ

या मुशरिका	बदकार औरत	सिवा	निकाह नहीं करता	बदकार मर्द	2	मोमिनीन	से - कि

وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى

पर	यह	और हराम किया गया	या शिर्क करने वाला मर्द	सिवा बदकार मर्द	निकाह नहीं करती	और बदकार (औरत)

الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا

फिर वह न लाएं	पाक दामन औरतें	तुहमत लगाएं	और जो लोग	3	मोमिनीन

بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ

उन की	और तुम न कुबूल करो	कोड़े	अस्सी (80)	तो तुम उन्हें कोड़े मारो	गवाह	चार (4)

شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

जिन लोगो ने तौबा कर ली	मगर	4	नाफ़रमान	वह	यही लोग	कभी	गवाही

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥ وَالَّذِيْنَ

और जो लोग	5	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और उन्हों ने इस्लाह कर ली	उस के बाद

يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ

उनकी जानें (खुद)	सिवा	गवाह	उन के	और न हों	अपनी बीवियां	तुहमत लगाएं

فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٦

6	सच बोलने वाले	कि वह बेशक से	अल्लाह की कसम	गवाहियाँ	चार (4)	उन में से एक	पस गवाही

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٧

7	झूट बोलने वाले	से	अगर है वह	उस पर	अल्लाह की लानत	यह कि	और पाँचवी

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यह एक सूरत है जो हम ने नाज़िल की, और इस (के अहकाम) को फ़र्ज़ किया, और हम ने इस में वाज़ेह आयतें नाज़िल कीं, ताकि तुम याद रखो (ध्यान दो)। (1) बदकार औरत और बदकार मर्द दोनों में से हर एक को सो (100) कोड़े मारो, और उन पर न खाओ तरस अल्लाह का हुक्म (चलाने) में, अगर तुम अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हो, और चाहिए कि उन की सज़ा (के वक़्त) मौजूद हो मुसलमानों की एक जमाअत। (2) बदकार मर्द बदकार औरत या मुश्रिका के सिवा निकाह नहीं करता, और बदकार औरत (भी) बदकार या शिर्क करने वाले मर्द के सिवा (किसी से) निकाह नहीं करती, और यह (ऐसा निकाह) मोमिनों पर हराम किया गया है। (3) और जो लोग तुहमत लगाएं पाक दामन औरतों पर, फिर वह (उस पर) चार (4) गवाह न लाएं तो तुम उन्हें अस्सी (80) कोड़े मारो और तुम कुबूल न करो कभी उन की गवाही, यही नाफ़रमान लोग हैं। (4) मगर जिन लोगों न उस के बाद तौबा कर ली और उन्हों ने इस्लाह कर ली, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5) और जो लोग अपनी बीवियों पर तुहमत लगाएं, और खुद उन के सिवा उन के गवाह न हों, तो उन में से हर एक की गवाही यह है कि अल्लाह की क़सम के साथ चार बार गवाही दें कि वह सच बोलने वालों में से हैं (सच्चा है)। (6) और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूट बोलने वालों में से है (झूटा है)। (7)

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ

कि वह	अल्लाह की क़सम	चार बार गवाही	गवाही दे	अगर	सज़ा	उस औरत से	और टल जाएगी

لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۙ﴿٨﴾ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ

वह है	अगर	उस पर	अल्लाह का ग़ज़ब	यह कि	और पाँचवीं बार	8	झूटे लोग	अलबत्ता-से

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٩﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	9	सच्चे लोग	से

تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ ع ١٠ ٧

तुम में से	एक जमाअ़त	बड़ा बुहतान लाए	बेशक जो लोग	10	हिक्मत वाला	तौबा क़ुबूल करने वाला

لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ

जो उस ने कमाया (किया)	उन में से	हर एक आदमी के लिए	बेहतर है तुम्हारे लिए	बल्कि वह	अपने लिए	बुरा	तुम उसे गुमान न करो

مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١﴾ لَوْلَآ

क्यों न	11	बड़ा	अ़ज़ाब	उस के लिए	उन में से	बड़ा उस का	उठाया	और वह जिस	गुनाह से

اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا

और उन्हों ने कहा	नेक	अपनों के बारे में	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	गुमान किया	तुम ने वह सुना	जब

هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٢﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا

वह न लाए	पस जब	गवाह	चार (4)	उस पर	वह लाए	क्यों न	12	नुमायान	बुहतान	यह

بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	13	वही झूटे	अल्लाह के नज़्दीक	तो वही लोग	गवाह

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ

उस में	तुम पड़े	उस में जो	ज़रूर तुम पर पड़ता	और आख़िरत	दुनिया में	और उस की रहमत	तुम पर

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ

अपने मुँह से	और तुम कहते थे	अपनी ज़बानों पर	जब तुम लाते थे उसे	14	बड़ा	अ़ज़ाब

مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

15	बहुत बड़ी (बात)	अल्लाह के नज़्दीक	हालांकि वह	हलकी बात	और तुम उसे गुमान करते थे	कोई इल्म	उस का	तुम्हें	जो नहीं

وَلَوْ لَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ

तू पाक है	ऐसी बात	कि हम कहें	हमारे लिए	नहीं है	तुम ने कहा	तुम ने वह सुना	जब	और क्यों न

هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا

कभी भी	ऐसा काम	तुम फिर करो	कि	तुम्हें नसीहत करता है अल्लाह	16	बड़ा	बुहतान	यह

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

18	हिक्मत वाला	बड़ा जानने वाला	और अल्लाह	आयतें (अहकाम)	तुम्हारे लिए	और बयान करता है अल्लाह	17	ईमान वाले	अगर तुम हो

और उस औ़रत से टल जाएगी सज़ा अगर वह चार बार अल्लाह की क़सम के साथ गवाही दे कि वह (मर्द) अलबत्ता झूटों में से है (झूटा है)। (8) और पाँचवी बार यह कि उस औ़रत (मुझ) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर वह सच्चों में से है (सच्चा है)। (9) और अगर तुम पर न होता अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत (तो यह मुश्किल हल न होती) और यह कि अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, हक्मत वाला है। (10) बेशक जो लोग बड़ा बुहतान लाए, तुम (ही) में से एक जमाअ़त हैं, तुम उसे अपने लिए बुरा गुमान न करो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है, उन में से हर आदमी के लिए जितना उस ने किया (उतना) गुनाह है, और जिस ने उस का बड़ा (तूफ़ान) उठाया उस के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (11) जब तुम ने वह (बुहतान) सुना तो क्यों न गुमान किया मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों ने अपनों के बारे में (गुमान) नेक, और उन्हों ने (क्यों न) कहा? यह सरीह बुहतान है। (12) वह क्यों न लाए उस पर चार गवाह, पस जब वह गवाह न लाए तो अल्लाह के नज़्दीक वही झूटे हैं। (13) और अगर तुम पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो जिस (शुग़्ल में) तुम पड़े थे तुम पर ज़रूर पड़ता बड़ा अ़ज़ाब। (14) जब तुम (एक दूसरे से सुन कर) उसे अपनी ज़बान पर लाते थे, और तुम अपने मुँह से कहते थे जिस का तुम्हें कोई इल्म न था, और तुम उसे हलकी बात गुमान करते थे, हालांकि वह अल्लाह के नज़्दीक बहुत बड़ी बात थी। (15) जब तुम ने वह सुना क्यों न कहा? कि हमारे लिए (ज़ेबा) नहीं है कि हम ऐसी बात कहें, (ऐ अल्लाह) तू पाक है, यह बड़ा बुहतान है। (16) अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, (मुबादा) तुम ऐसा काम फिर कभी करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (17) और अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम (साफ़ साफ़) बयान करता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (18)

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ

उन के लिए	ईमान लाए (मोमिन)	में जो	बेहयाई	फैले	कि	पसंद करते हैं	जो लोग	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

19	तुम नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और आख़िरत में	दुनिया में	दर्दनाक	अ़ज़ाब

ع ٢ ٨ النصف وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

20	निहायत मेहरबान	शफ़्क़त करने वाला	और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ

क़दम (जमा)	पैरवी करता है	और जो	शैतान	क़दम (जमा)	तुम न पैरवी करो	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिनो)	ऐ

الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	और बुरी बात	बेहयाई का	हुक्म देता है	तो बेशक वह	शैतान

وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

जिसे वह चाहता है	पाक करता है	और लेकिन अल्लाह	कभी भी	कोई आदमी	तुम से	न पाक होता	और उस की रहमत

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ

और वसअ़त वाले	तुम में से	फ़ज़ीलत वाले	और क़सम न खाएं	21	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह

اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِى الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ

अल्लाह की राह में	और हिजरत करने वाले	और मिस्कीनों	क़राबत दार	कि (न) दें

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हें	अल्लाह बख़्शदे	कि	क्या तुम नहीं चाहते	और वह दरगुज़र करें	और चाहिए कि वह माफ़ कर दें

رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا

लानत है उन पर	मोमिन औरतें	भोली भाली अन्जान	पाक दामन (जमा)	जो लोग तुह्मत लगाते हैं	बेशक	22	निहायत मेहरबान

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۘ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ﴿٢٣﴾ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ

उन पर (ख़िलाफ़)	गवाही देंगे	दिन	23	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए	और आख़िरत	दुनिया में

اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ

पूरा देगा उन्हें	उस दिन	24	वह करते थे	उस की जो	और उन के पैर	और उन के हाथ	उन की ज़बानें

اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾ اَلْخَبِيْثٰتُ

नापाक (गन्दी) औरतें	25	ज़ाहिर करने वाला	बरहक़	वही	कि अल्लाह	और वह जान लेंगे	सच (ठीक ठीक)	उन का बदला	अल्लाह

لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ

और पाक मर्द (जमा)	पाक मर्दों के लिए	और पाक औरतें	गन्दी औरतों के लिए	और गन्दे मर्द	गन्दे मर्दों के लिए

ع ٣ ٩ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

26	इज़्ज़त की	और रोज़ी	मग़फ़िरत	उन के लिए	वह कहते हैं	उस से जो	पाक दामन हैं	यह लोग	पाक औरतों के लिए

बेशक जो लोग पसंद करते हैं कि मोमिनो में बेहयाई फैले उन के लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब है, और अल्लाह जानता है जो तुम नहीं जानते। (19)

और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत न होती (तो किया कुछ न हो जाता) और यह कि अल्लाह शफ़्क़त करने वाला, निहायत मेहरबान है। (20)

ऐ मोमिनो! तुम शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, और जो शैतान के क़दमों की पैरवी करता है तो वह (शैतान) हुक्म देता है बेहयाई का और बुरी बात का, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो तुम में से कोई आदमी कभी भी न पाक होता, और लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (21)

और क़सम न खाएं तुम में से फ़ज़ीलत वाले और (माल में) वसअ़त वाले कि वह क़राबतदारों को, मिस्कीनों को, और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वह माफ़ कर दें, और दरगुज़र करें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख़्शदे? और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (22)

बेशक जो लोग पाक दामन, अनजान मोमिन औरतों पर तुह्मत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत है, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (23)

जिस दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाऊँ उन के ख़िलाफ़ गवाही देंगे उस की जो वह करते थे। (24)

उस दिन अल्लाह उन्हें उन का बदला ठीक ठीक पूरा देगा, और वह जान लेंगे कि अल्लाह ही बरहक़ है (हक़ को) ज़ाहिर करने वाला। (25)

गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लिए हैं, और गन्दे मर्द गन्दी औरतों के लिए हैं, और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं, और पाक मर्द पाक औरतों के लिए हैं, यह लोग उस से बरी हैं जो वह कहते हैं, उन के लिए मग़फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी है। (26)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا

तुम इजाज़त ले लो	यहां तक कि	अपने घरों के सिवा	घर (जमा)	तुम न दाख़िल हो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ

फिर अगर	27	तुम नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए	बेहतर है	यह	उन के (रहने) वाले	पर- को	और तुम सलाम कर लो

لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ

तुम्हें कहा जाए	और अगर	तुम्हें	इजाज़त दी जाए	यहां तक कि	तो तुम न दाख़िल हो उस में	किसी को	उस में	तुम न पाओ

لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ

नहीं	28	जानने वाला	तुम करते हो	वह जो	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	ज़ियादा पाकीज़ा	यही	तो तुम लौट जाया करो	तुम लौट जाओ

عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

जानता है	और अल्लाह	तुम्हारी	कोई चीज़	जिन में	ग़ैर आबाद	उन घरों में	तुम दाख़िल हो	अगर	कोई गुनाह	तुम पर

مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا

और वह हिफ़ाज़त करें	अपनी निगाहें	से	वह नीची रखें	मोमिन मर्दों को	आप फ़रमा दें	29	तुम छुपाते हो	और जो	जो तुम ज़ाहिर करते हो

فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ

और फ़रमा दें	30	वह करते हैं	उस से जो	बाख़बर है	बेशक अल्लाह	उन के लिए	ज़ियादा सुथरा	यह	अपनी शर्मगाहें

لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ

और वह ज़ाहिर न करें	अपनी शर्मगाहें	और वह हिफ़ाज़त करें	अपनी निगाहें	से	वह नीची रखें	मोमिन औरतों को

زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰي جُيُوْبِهِنَّ ۠

अपने सीने (गिरेबानों)	पर	अपनी ओढ़नियां	और डाले रहें	उस में से ज़ाहिर हुआ	जो	मगर	अपनी ज़ीनत

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَاۗىِٕهِنَّ اَوْ اٰبَاۗءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

या	अपने शौहरों के बाप (ख़ुसर)	या	बाप (जमा)	या	अपने ख़ावन्दों पर	सिवाए	अपनी ज़ीनत	और वह ज़ाहिर न करें

اَبْنَاۗىِٕهِنَّ اَوْ اَبْنَاۗءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ

या	अपने भाई के बेटे (भतीजे)	या	अपने भाई	या	अपने शौहरों के बेटे	या	अपने बेटे

بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَاۗىِٕهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ

या ख़िद्मतगार मर्द	उन के दाएं हाथ (कनीज़ें)	या जिन के मालिक हुए	या अपनी (मुसलमान) औरतें	अपनी बहनों के बेटे (भान्जे)

غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰي

पर	वह वाक़िफ़ नहीं हुए	वह जो कि	या लड़के	मर्द	से	न ग़रज़ रखने वाले

عَوْرٰتِ النِّسَاۗءِ ۠ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ

से	जो छुपाए हुए हैं	कि वह जान (पहचान) लिया जाए	अपने पाऊँ	और वह न मारें	औरतों के पर्दे

زِيْنَتِهِنَّ ۭ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾

31	फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	ऐ ईमान वालो	सब	अल्लाह की तरफ़	और तुम तौबा करो	अपनी ज़ीनत

ऐ मोमिनों! तुम अपने घरों के सिवा (दूसरे) घरों में दाख़िल न हो, यहां तक कि तुम इजाज़त ले लो, और उन के रहने वालों को सलाम कर लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (27) फिर अगर उस (घर) में तुम किसी को न पाओ तो उस में दाख़िल न हो यहां तक कि तुम्हें इजाज़त दी जाए, और अगर तुम्हें कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाया करो, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा पाकीज़ा है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानने वाला है। (28) तुम पर (इस में) कोई गुनाह नहीं अगर तुम उन घरों में दाख़िल हो जिन में किसी की सुकूनत (रिहाइश) नहीं, जिस में तुम्हारी कोई चीज़ हो और अल्लाह (ख़ूब) जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (29) आप (स) फ़रमां दें मोमिन मर्दों को कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यह उन के लिए ज़ियादा सुथरा है, बेशक अल्लाह उस से बाख़बर है जो वह करते हैं। (30) और आप (स) फ़रमां दें मोमिन औरतों को कि वह नीची रखें अपनी निगाहें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ामात) को ज़ाहिर न करें मगर जो उस में से ज़ाहिर हुआ (जिस का ज़ाहिर होना नागुज़ीर है) और वह अपनी ओढ़नियां अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ाम) ज़ाहिर न करें सिवाए अपने ख़ावन्दों पर, या अपने बाप, या अपने ख़ुसर, या अपने बेटों, या अपने शौहर के बेटों, या अपने भाइयों या अपने भतीजों पर, अपने भान्जों, या अपनी मुसलमान औरतों, या अपनी कनीज़ों, या वह ख़िद्मतगार मर्द जो (औरतों से) ग़रज़ न रखने वाले हों, या वह लड़के जो अभी वाक़िफ़ नहीं औरतों के पर्दे (मामलात से), और वह अपने पाऊँ (ज़मीन पर) न मारें कि वह जो अपनी ज़ीनत छुपाए हुए हैं पहचान ली जाए, अल्लाह के आगे तौबा करो तुम सब ऐ ईमान वालो! ताकि तुम दो जहान की कामयाबी पाओ। (31)

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ

और अपनी कनीज़ें	अपने ग़ुलाम	से	और नेक	अपने में से (अपनी)	बेवा औरतें	और तुम निकाह करो

اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٢﴾

32	इल्म वाला	वस्अ़त वाला	और अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर देगा	तंग दस्त (जमा)	अगर वह हों

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ

अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर दे	यहां तक कि	निकाह	नहीं पाते	वह लोग जो	और चाहिए कि बचे रहें

وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ

तो तुम उन से मकातिबत (आज़ादी की तहरीर) करलो	तुम्हारे दाएं हाथ (ग़ुलाम)	मालिक हों	उन में से जो	मकातिबत	चाहते हों	और जो लोग

اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ

जो उस ने तुम्हें दिया	अल्लाह का माल	से	और तुम उनको दो	बेहतरी	उन में	अगर तुम जानो (पाओ)

وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ

सामान	ताकि तुम हासिल कर लो	पाक दामन रहना	अगर वह चाहें	बदकारी पर	अपनी कनीज़ें	और तुम न मजबूर करो

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	उन की मजबूरी	बाद	तो बेशक अल्लाह	उन्हें मजबूर करेगा	और जो	दुनिया	ज़िन्दगी

رَّحِيْمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	से	और मिसालें	वाज़ेह	अहकाम	तुम्हारी तरफ़	हम ने नाज़िल किए	और तहक़ीक़	33	निहायत मेहरबान

ع ٨ ١٠ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٤﴾ ع اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	नूर	अल्लाह	34	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	तुम से पहले	गुज़रे

وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ

चिराग़	एक चिराग़	उस में	जैसे एक ताक़	उस का नूर	मिसाल	और ज़मीन

فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ

दरख़्त	से	रोशन किया जाता है	एक सितारा चमकदार	गोया वह	वह शीशा	एक शीशे में

مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ

ख़्वाह	रोशन हो जाए	उस का तेल	क़रीब है	और न मग़रिब का	न मश्रिक़ का	ज़ैतून	मुबारक

لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

वह जिस को चाहता है	अपने नूर की तरफ़	रहनुमाई करता है अल्लाह	रोशनी पर रोशनी	आग	उसे न छुए

وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣٥﴾ لا فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ

हुक्म दिया	उन घरों में	35	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	लोगों के लिए	मिसालें	और बयान करता है अल्लाह

اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿٣٦﴾ لا

36	और शाम	सुबह	उन में	उस की	तस्बीह करते हैं	उस का नाम	उन में	और लिया जाए	कि बुलन्द किया जाए	अल्लाह

और तुम निकाह करो अपनी बेवा औ़रतों का और अपने नेक ग़ुलामों और अपनी कनीज़ों का, अगर वह तंग दस्त हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल से, और अल्लाह वस्अ़त वाला, इल्म वाला है। (32)
और चाहिए कि बचे रहें (पाक दामन रहें) वह जो कि निकाह (मक़्दूर) नहीं पाते यहां तक कि अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे, और तुम्हारे ग़ुलाम जो मकातिबत (कुछ ले दे कर आज़ादी की तहरीर) चाहते हों तो उन से मकातिबत कर लो अगर तुम उन में बेहतरी पाओ, और उस माल में से उन को दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, और अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करो अगर वह पाक दामन रहना चाहें (महज़ इस लिए कि) तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सामान हासिल कर लो, और जो उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (33)
और तहक़ीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किए वाज़े अहकाम, और उन लोगों की मिसालें जो तुम से पहले गुज़रे हैं और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (34)
अल्लाह नूर है ज़मीन और आस्मान का, उस के नूर की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक ताक़ हो, उस में एक चिराग़ हो, चिराग़ एक शीशे की (क़न्दील में) हो, वह शीशा गोया एक चमकदार सितारा है,
वह रोशन किया जाता है ज़ैतून के एक मुबारक दरख़्त से जो न शर्क़ी है न गरबी, क़रीब है कि उस का तेल रोशन हो जाए चाहे उसे आग न छुए, नूर पर नूर (सरासर रोशनी), अल्लाह जिस को चाहता है अपने नूर की तरफ़ रहनुमाई करता है, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर शै का जानने वाला। (35)
(यह रोशनी है) उन घरों में (जिन की निस्बत) अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उन्हें बुलन्द किया जाए और उन में उस का नाम लिया जाए, वह उन में सुबह शाम उस की तस्बीह करते हैं। (36)

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ

नमाज़	और क़ाइम रखना	अल्लाह की याद	से	और न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	तिजारत	उन्हें ग़ाफ़िल नहीं करती	वह लोग

وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۙ ﴿٣٧﴾

37	और आँखें	दिल (जमा)	उस में	उलट जाएंगे	उस दिन से	और डरते हैं	ज़कात	और अदा करना

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ

रिज़्क़ देता है	और अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	जो उन्हों ने किया (आमाल)	बेहतर से बेहतर	ताकि उन्हें जज़ा दे अल्लाह

مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ

सुराब की तरह	उन के अ़मल	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	38	बेहिसाब	जिसे चाहता है

بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا

कुछ भी	उस को नहीं पाता	जब वह वहां आता है	यहां तक कि	पानी	प्यासा	गुमान करता है	चटियल मैदान में

وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۙ ﴿٣٩﴾

39	तेज़ हिसाब करने वाला	और अल्लाह	उस का हिसाब	तो उस (अल्लाह) ने उसे पूरा कर दिया	अपने पास	अल्लाह	और उस ने पाया

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ

उस के ऊपर से	एक (दूसरी) मौज	उस के ऊपर से	मौज	उसे ढांप लेती है	गहरा पानी	दर्या में	या जैसे अन्धेरे

سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ

तवक़्क़ो नहीं	अपना हाथ	वह निकाले	जब	बाज़ (दूसरे) के ऊपर	उस के बाज़ (एक)	अन्धेरे	बादल

يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾ اَلَمْ تَرَ

क्या तू ने नहीं देखा	40	कोई नूर	तो नहीं उस के लिए	नूर	उस के लिए	न बनाए (न दे) अल्लाह	और जिसे	तू उसे देख सके

ع ٥ ٦ ١١

اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ

हर एक	पर फैलाए हुए	और परिन्दे	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	उस की	पाकीज़गी बयान करता है	कि अल्लाह

قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

और अल्लाह के लिए बादशाहत	41	वह करते हैं	वह जो	जानता है	और अल्लाह	अपनी तस्बीह	अपनी दुआ	जान ली

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِىْ سَحَابًا ثُمَّ

फिर	बादल (जमा)	चलाता है	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	42	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ़	और ज़मीन	आस्मानों

يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ

और वह उतारता है	उस के दरमियान से	निकलती है	बारिश	फिर तू देखे	तह ब तह	वह उस को करता है	फिर	आपस में	मिलाता है वह

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

जिस पर चाहे	उसे	फिर वह डाल देता है	ओले	से	उस में	पहाड़	से	आस्मानों से

وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ؕ ﴿٤٣﴾

43	आँखों को	ले जाए	उस की बिजली	चमक	क़रीब है	जिस से चाहे	से	और उसे फेर देता है

वह लोग (जिन्हें) ग़ाफ़िल नहीं करती कोई तिजारत, न ख़रीद ओ फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ाइम रखने और ज़कात अदा करने से, वह उस दिन से डरते हैं जिस में उलट जाएंगे दिल और आँखें। (37)
ताकि अल्लाह उन के आमाल की बेहतर से बेहतर जज़ा दे, और उन्हें अपने फ़ज़्ल से ज़ियादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (38)
और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के आमाल सुराब (चमकते रेत के धोके) की तरह हैं चटियल मैदान में, प्यासा उसे पानी गुमान करता है, यहां तक कि जब वह वहां आता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता, और उस ने अल्लाह को अपने पास पाया तो अल्लाह ने उस का हिसाब पूरा कर दिया, और अल्लाह तेज़ हिसाब करने वाला है। (39)
(या उन के आमाल ऐसे हैं) जैसे गहरे दर्या में अन्धेरे, जिन्हें ढांप लेती है मौज, उस के ऊपर दूसरी मौज, उस के ऊपर बादल, अन्धेरे हैं एक पर दूसरा, जब वह अपना हाथ निकाले तो तवक़्क़ो नहीं कि उसे देख सके, और जिस के लिए अल्लाह नूर न बनाए उस के लिए कोई नूर नहीं। (40)
क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, और पर फैलाए हुए परिन्दे (भी) हर एक ने जान ली है अपनी दुआ और अपनी तस्बीह, और अल्लाह जानता है जो वह करते हैं। (41)
और अल्लाह (ही) की बादशाहत है आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह (ही) की तरफ़ लौट कर जाना है। (42)
क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह बादल चलाता है, फिर उन्हें आपस में मिलाता है, फिर वह उन्हें तह ब तह कर देता है, फिर तू देखे उन के दरमियान से बारिश निकलती है, और वह आस्मानो (में जो ओलों के) पहाड़ हैं उन से उतारता है ओले। फिर वह जिस पर चाहे डाल देता है, और जिस से चाहे वह उसे फेर देता है, क़रीब है कि उस की बिजली की चमक आँखों (की बीनाई) ले जाए। (43)

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

बदलता है अल्लाह	रात	और दिन	बेशक	इस में	इब्रत है	आँखों वाले (अ़क़्ल मन्द)	44

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَاۗبَّةٍ مِّنْ مَّاۗءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰي بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ

और अल्लाह	पैदा किया	हर जानदार	पानी से	पस उन में से	कोई चलता है	अपने पेट पर	और उन में से

مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰي رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓي اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ

कोई चलता है	दो पाऊँ पर	और उन में से	कोई चलता है	चार पर	अल्लाह पैदा करता है

مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۭ

जो वह चाहता है	बेशक अल्लाह	पर	हर शै	कुदरत रखने वाला	45	तहक़ीक़ हम ने नाज़िल की	आयतें	वाज़ेह

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾ وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا

और अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है	तरफ़	रास्ता	सीधा	46	और वह कहते हैं	हम ईमान लाए

بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ

अल्लाह पर	और रसूल पर	और हम ने हुक्म माना	फिर	फिर गया	एक फ़रीक़	उस में से	उस के बाद

وَمَآ اُولٰۗىِٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और वह नहीं	ईमान वाले	47	और जब	वह बुलाए जाते हैं	अल्लाह की तरफ़	और उस का रसूल

لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ

ताकि वह फ़ैसला कर दे	उन के दरमियान	नागहां	एक फ़रीक़	उन में से	मुँह फेर लेता है	48	और अगर	हो	उन के लिए	हक़

يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ

वह आते हैं उस की तरफ़	गर्दन झुकाए	49	क्या उन के दिलों में	कोई रोग	या	वह शक में पड़े हैं	या

ع ١٠ ١٢ الثلثة

يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۭ بَلْ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾

वह डरते हैं	कि	ज़ुल्म करेगा अल्लाह	उन पर	और उस का रसूल	बल्कि	वह	वही	ज़ालिम (जमा)	50

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ

इस के सिवा नहीं है	बात	मोमिन (जमा)	जब	वह बुलाए जाते हैं	अल्लाह की तरफ़	और उस का रसूल	ताकि वह फ़ैसला कर दें

بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾ وَمَنْ

उन के दरमियान	कि- तो	वह कहते हैं	हम ने सुना	और हम ने इताअ़त की	और वह	वही	फ़लाह पाने वाले	51	और जो

يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٥٢﴾

इताअ़त करे अल्लाह की	और उस का रसूल	और डरे	अल्लाह	और परहेज़गारी करे	पस वह	वही	कामयाब होने वाले	52

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۭ قُلْ

और उन्हों ने क़समें खाईं	अल्लाह की	और ज़ोरदार क़समें	अलबत्ता अगर	आप हुक्म दें उन्हें	तो वह ज़रूर निकल खड़े होंगे	फ़रमा दें

لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٣﴾

तुम क़समें न खाओ	इताअ़त	पसंदीदा	बेशक अल्लाह	ख़बर रखता है	वह जो	तुम करते हो	53

अल्लाह रात और दिन को बदलता है, बेशक उस में इब्रत है अ़क़्ल मन्दों के लिए। (44)
और अल्लाह ने हर जानदार पानी से पैदा किया, पस उन में से कोई अपने पेट पर चलता है, और उन में से कोई दो पाऊँ पर चलता है, और उन में से कोई चार (पाऊँ) पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है, बेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (45)
तहक़ीक़ हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल कीं, और अल्लाह जिसे चहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (46)
और वह कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हम ने हुक्म माना, फिर उस के बाद उस में से एक फ़रीक़ फिर गया, और वह ईमान वाले नहीं। (47)
और जब वह बुलाए जाते हैं अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दे तो नागहां उन में से एक फ़रीक़ मुँह फेर लेता है। (48)
और अगर उन के लिए हक़ (पहुँचता) हो तो वह उस की तरफ़ गर्दन झुकाए (ख़ुशी से) चले आते हैं। (49)
क्या उन के दिलों में कोई रोग है, या वह शक में पड़े हैं, या वह डरते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे, (नहीं) बल्कि वही ज़ालिम हैं। (50)
मोमिनों की बात इस के सिवा नहीं कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाते हैं ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दें, तो वह कहते है हम ने सुना और हम ने इताअ़त की और वही हैं फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले। (51)
और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करे और अल्लाह से डरे, और परहेज़गारी करे, पस वही लोग कामयाब होने वाले हैं। (52)
और उन्हों ने अल्लाह की ज़ोरदार क़समें खाईं कि अगर आप (स) उन्हें हुक्म दें तो वह ज़रूर (जिहाद) के लिए निकल खड़े होंगे, आप (स) फ़रमां दें तुम क़समें न खाओ, पसंदीदा इताअ़त (मतलूब है), बेशक अल्लाह उस की ख़बर रखता है वह जो तुम करते हो। (53)

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ

उस पर	तो इस के सिवा नहीं	फिर अगर तुम फिर गए	रसूल की	और इताअ़त करो	तुम इताअ़त करो अल्लाह की	फ़रमा दें

مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۭ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۭ وَمَا عَلَى

पर	और नहीं	तुम हिदायत पालोगे	तुम इताअ़त करोगे	और अगर	जो बोझ डाला गया तुम पर (ज़िम्मे)	और तुम पर	जो बोझ डाला गया (ज़िम्मे)

الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا

और काम किए	तुम में से	उन लोगों से जो ईमान लाए	अल्लाह ने वादा किया	54	साफ़ साफ़	पहुँचा देना	मगर-सिर्फ़	रसूल

الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	उस ने ख़िलाफ़त दी	जैसे	ज़मीन में	वह ज़रूर उन्हें ख़िलाफ़त देगा	नेक

مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ

और अलबत्ता वह ज़रूर बदल देगा उन के लिए	उन के लिए	उस ने पसंद किया	जो	उन का दीन	उन के लिए	और ज़रूर कुव्वत देगा	उन से पहले

مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۭ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـــًٔا ۭ وَمَنْ

और जिस	कोई शै	मेरा	वह शरीक न करेंगे	वह मेरी इबादत करेंगे	अम्न	उन का ख़ौफ़	बाद

كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	और तुम क़ाइम करो	55	नाफ़रमान (जमा)	पस वही लोग	उस के बाद	नाशुक्री की

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

हरगिज़ गुमान न करें	56	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	रसूल	और इताअ़त करो	ज़कात	और अदा करो तुम

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَلَبِئْسَ

और अलबत्ता बुरा	दोज़ख़	उन का ठिकाना	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले हैं	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ ع ١٣

मालिक हुए	वह जो कि	चाहिए कि इजाज़त लें तुम से	जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	57	ठिकाना

اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۭ

बार-वक़्त	तीन	तुम में से	एहतिलाम-शऊर	नहीं पहुँचे	और वह लोग जो	तुम्हारे दाएं हाथ (ग़ुलाम)

مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ

दोपहर	से-को	अपने कपड़े	उतार कर रख देते हो	और जब	नमाज़े फ़ज्र	पहले

وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاۗءِ ۣ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۭ لَيْسَ عَلَيْكُمْ

नहीं तुम पर	तुम्हारे लिए	पर्दा	तीन	नमाज़े इशा	और बाद	

وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۭ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰي

पर-पास	तुम में से बाज़ (एक)	तुम्हारे पास	फेरा करने वाले	उन के बाद-अ़लावा	कोई गुनाह	और न उन पर

بَعْضٍ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

58	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अहकाम	तुम्हारे लिए	वाज़ेह करता है अल्लाह	इसी तरह	बाज़ (दूसरे)

आप (स) फ़रमां दें तुम अल्लाह की और रसूल की इताअ़त करो, फिर आगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि रसूल पर उसी क़दर है जो उस के ज़िम्मे किया गया है और तुम पर (लाज़िम है) जो तुम्हारे ज़िम्मे डाला गया है, अगर तुम उस की इताअ़त करोगे तो हिदायत पा लोगे, और रसूल पर सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (54)

अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से ईमान लाए और उन्हों ने नेक काम किए कि उन्हें ज़रूर ख़िलाफ़त (सलतनत) देगा ज़मीन में, जैसे उन के पहलों को ख़िलाफ़त दी, और उन के लिए उन के दीन को ज़रूर कुव्वत (इस्तेहकाम) देगा, जो उस ने उन के लिए पसंद किया, और उन के लिए ख़ौफ़ के बाद ज़रूर अम्न से बदल देगा, वह मेरी इबादत करेंगे, मेरा शरीक न करेंगे किसी शै को, और जिस ने उस के बाद नाशुक्री की, पस वही लोग नाफ़रमान हैं। (55)

और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो, और रसूल की इताअ़त करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (56)

हरगिज़ गुमान न करना कि काफ़िर ज़मीन में आजिज़ करने वाले हैं, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और (वह) अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (57)

ऐ ईमान वालो! चाहिए कि तुम्हारे ग़ुलाम (तुम्हारे पास आने की) तुम से इजाज़त लें, और वह जो नहीं पहुँचे तुम में से (हदे) शऊर को, तीन वक़्त (यानी) नमाज़े फ़ज्र से पहले और जब तुम अपने कपड़े उतार कर रख देते हो दोपहर को, और नमाज़े इशा के बाद, तुम्हारे लिए (यह) तीन पर्दे (के औक़ात) हैं, नहीं तुम पर और न उन पर कोई गुनाह उन के अ़लावा (औक़ात में), तुम में से बाज़, बाज़ के पास फिरा करते हैं, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (58)

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا

और जब	पहुँचें	बच्चे	तुम में से	(हदे) शऊर को	पस चाहिए कि वह इजाज़त लें	जैसे

اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

इजाज़त लेते थे	वह जो	उन से पहले	इसी तरह	अल्लाह वाज़ेह करता है	तुम्हारे लिए

اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۹﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِىْ

अपने अहकाम	और अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला	59	और ख़ाना नशीन बूढ़ी	औरतों में से	वह जो

لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ

आरज़ू नहीं रखती हैं	निकाह	तो नहीं	उन पर	कोई गुनाह	कि वह उतार रखें

ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ

अपने कपड़े	न ज़ाहिर करते हुए	ज़ीनत को	और अगर	वह बचें

خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۶۰﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى

बेहतर	उन के लिए	और अल्लाह	सुनने वाला	जानने वाला	60	नहीं	नाबीना पर

حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ

कोई गुनाह	और न	लंगड़े पर	कोई गुनाह	और न	बीमार पर	कोई गुनाह

وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ

और न	ख़ुद तुम पर	कि तुम खाओ	अपने घरों से

اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ

या अपने बापों के घरो से	या अपनी माँओ के घरों से	या अपने भाइयों के घरों से

اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ

या अपनी बहनों के घरों से	या अपने ताए चचाओं के घरों से	या अपनी फूफियों के घरों से

اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ

या अपने ख़ालू, मामूओं के घरों से	या अपनी ख़ालाओं के घरों से	या	जिस (घर) की तुम्हारे क़ब्ज़े में हों

مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ

उस की कुन्जियां	या अपने दोस्त (के घर से)	नहीं	तुम पर	कोई गुनाह	कि

تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا

तुम खाओ	साथ साथ	या	जुदा जुदा	फिर जब	तुम दाख़िल हो घरों में

فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً

तो सलाम करो	अपने लोगों को	दुआए ख़ैर	से	अल्लाह के हां	बाबरकत

ع ٨ ١٤ طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۱﴾

पाकीज़ा	इसी तरह	अल्लाह वाज़ेह करता है	तुम्हारे लिए	अहकाम	ताकि तुम	समझो	61

और जब तुम में से बच्चे पहुँचें हदे शऊर को, पस चाहिए कि वह इजाज़त लें जैसे उन से पहले इजाज़त लेते थे, इसी तरह अल्लाह वाज़ेह करता है तुम्हारे लिए अपने अहकाम, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (59)

और जो ख़ाना नशीन बूढ़ी औरतें निकाह की आरज़ू नहीं रखतीं, तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने (ज़ाइद) कपड़े उतार रखें, ज़ीनत (सिंघार) ज़ाहिर न करते हुए, और अगर वह (उस से भी) बचें तो उन के लिए बेहतर है, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (60)

कोई गुनाह नहीं नाबीना पर, और न लंगड़े पर कोई गुनाह है, और न बीमार पर कोई गुनाह है, न ख़ुद तुम पर कि तुम खाओ अपने घरों से, या अपने बापों के घरो से, या अपनी माँओ के घरों से, या अपने भाइयों के घरो से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने ताए चचाओं के घरों से, या अपनी फुफियों के घरों से, या अपने ख़ालू, मामूओं के घरों से, या अपनी ख़लाओं के घरों से, या जिस घर की कुन्जियां तुम्हारे क़बज़े में हों, या अपने दोस्त के घर से, तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम इकटठे मिल कर खाओ, या जुदा जुदा, फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो, दुआए ख़ैर अल्लाह के हां से, बाबरकत, पाकीज़ा, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (61)

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह हैं जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) पर यक़ीन किया और जब वह किसी इज्तिमाई काम में उस (रसूल) के साथ होते हैं तो चले नहीं जाते जब तक वह उस से इजाज़त न ले लें, बेशक जो लोग आप (स) से इजाज़त मांगते हैं यही लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं, पस जब वह आप (स) से अपने किसी काम के लिए इजाज़त मांगें तो इजाज़त दे दें जिस को उन में से आप चाहें, और उन के लिए अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (62)

तुम न बना लो अपने दरमियान रसूल को बुलाना जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो, तहक़ीक़ अल्लाह जानता है उन लोगो को जो तुम में से नज़र बचा कर चुपके से खिसक जाते हैं, पस चाहिए कि वह डरें जो उस के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन पर कोई आफ़त पहुँचे या उन को दर्दनाक अ़ज़ाब पहुँचे। (63)

याद रखो! बेशक अल्लाह के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तहक़ीक़ वह जानता है जिस (हाल) पर तुम हो, और उस दिन को जब उस की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे, फिर वह उन्हें बताएगा जो कुछ उन्हों ने किया, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (64)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने अपने बन्दे पर "फ़ुरक़ान" (अच्छे बुरे में फ़र्क़ और फ़ैसला करने वाली किताब) को नाज़िल किया ताकि वह सारे जहानों के लिए डराने वाला हो। (1)

वह जिस के लिए बादशाहत है आस्मानों और ज़मीन की, और उस ने कोई बेटा नहीं बनाया और उस का कोई शरीक नहीं सलतनत में, और उस ने हर शै को पैदा किया, फिर उस का एक (मुनासिब) अन्दाज़ा किया। (2)

اِنَّمَا	الْمُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	وَاِذَا كَانُوْا
वह होते हैं	और जब	और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	जो ईमान लाए (यक़ीन किया)	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं

مَعَهٗ	عَلٰٓى اَمْرٍ	جَامِعٍ	لَّمْ يَذْهَبُوْا	حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ	اِنَّ	
बेशक	वह उस से इजाज़त लें	जब तक	वह नहीं जाते	सब मिल कर करने का काम	पर-में	उस के साथ

الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	
और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं	वह जो	यही लोग	इजाज़त मांगते हैं आप (स) से	जो लोग

فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ	لِبَعْضِ	شَاْنِهِمْ	فَاْذَنْ	لِّمَنْ شِئْتَ	مِنْهُمْ		
उन में से	आप चाहें	जिस को	तो इजाज़त दे दें	अपने काम	किसी के लिए	वह तुम से इजाज़त मांगें	पस जब

وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ	اِنَّ اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾	لَا تَجْعَلُوْا	دُعَآءَ		
बुलाना	तुम न बना लो	62	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह (से)	और बख़्शिश मांगें

الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ	كَدُعَآءِ	بَعْضِكُمْ	بَعْضًا	قَدْ يَعْلَمُ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	
जो लोग	अल्लाह	तहक़ीक़ जानता है	बाज़ (दूसरे) को	अपने बाज़ (एक)	जैसे बुलाना	अपने दरमियान	रसूल को

يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ	لِوَاذًا	فَلْيَحْذَرِ	الَّذِيْنَ	يُخَالِفُوْنَ	عَنْ اَمْرِهٖٓ		
उस के हुक्म से	ख़िलाफ़ करते हैं	जो लोग	पस चाहिए कि वह डरें	नज़र बचा कर	तुम में से	चुपके से खिसक जाते हैं	

اَنْ تُصِيْبَهُمْ	فِتْنَةٌ	اَوْ يُصِيْبَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾	اَلَآ اِنَّ	لِلّٰهِ	مَا
जो	याद रखो! बेशक अल्लाह के लिए	63	दर्दनाक	अ़ज़ाब	या पहुँचे उन को	कोई आफ़त	पहुँचे उन पर	कि

فِى السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	قَدْ يَعْلَمُ	مَآ اَنْتُمْ	عَلَيْهِ	وَيَوْمَ		
और जिस दिन	उस पर	तुम	जो-जिस	तहक़ीक़ वह जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में	

يُرْجَعُوْنَ	اِلَيْهِ	فَيُنَبِّئُهُمْ	بِمَا عَمِلُوْا	وَاللّٰهُ	بِكُلِّ شَىْءٍ	عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾	ع ٩ ٣ ١٥
64	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	उन्हों ने किया	जो-जिस	फिर वह उन्हें बताएगा	उस की तरफ़	वह लौटाए जाएंगे

آيَاتُهَا ٧٧ ❀ سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ (٢٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआ़त 6 — (25) सूरतुल फ़ुरक़ान — कसौटी — आयात 77

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِىْ	نَزَّلَ الْفُرْقَانَ	عَلٰى عَبْدِهٖ	لِيَكُوْنَ	لِلْعٰلَمِيْنَ	نَذِيْرَا ﴿١﴾		
1	डराने वाला	सारे जहानों के लिए	ताकि वह हो	अपने बन्दे पर	नाज़िल किया फ़र्क़ करने वाली किताब (क़ुरआन)	वह जो-जिस	बड़ी बरकत वाला

الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَلَمْ يَتَّخِذْ	وَلَدًا	وَّلَمْ يَكُنْ		
और नहीं है	कोई बेटा	और उस ने नहीं बनाया	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	वह जिस के लिए	

لَّهٗ شَرِيْكٌ	فِى الْمُلْكِ	وَخَلَقَ	كُلَّ شَىْءٍ	فَقَدَّرَهٗ	تَقْدِيْرًا ﴿٢﴾		
2	एक अन्दाज़ा	फिर उस का अन्दाज़ा ठहराया	हर शै	और उस ने पैदा किया	सलतनत में	कोई शरीक	उस का

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ

पैदा किए गए हैं	बल्कि वह	कुछ	वह नहीं पैदा करते	माबूद	उस के अ़लावा	और उन्हों ने बना लिए

وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا

किसी मौत का	और न वह इख़्तियार रखते हैं	और न किसी नफ़ा का	किसी नुक़्सान का	अपने लिए	और वह इख़्तियार नहीं रखते

وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۳ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

मगर-सिर्फ़	नहीं यह	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	3	और न फिर उठने का	और न किसी ज़िन्दगी का

اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ

तहक़ीक़ वह आगए	दूसरे लोग (जमा)	उस पर	उस की मदद की	उस ने उसे घड़ लिया है	बहुतान-मन घड़त

ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۚ ۴ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى

पस वह पढ़ी जाती है	उस ने उन्हें लिख लिया है	पहले लोग	कहानियाँ	और उन्हों ने कहा	4	और झूट	ज़ुल्म

عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۵ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ

राज़	जानता है	वह जो	उस को नाज़िल किया है	फ़रमा दें	5	और शाम	सुबह	उस पर

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۶ وَقَالُوْا

और उन्हों ने कहा	6	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक वह है	और ज़मीन	आस्मानों में

مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ

बाज़ार (जमा)	में	चलता (फिरता) है	खाना	वह खाता है	यह रसूल	कैसा है

لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۷ اَوْ يُلْقٰٓى

या डाला (उतारा) जाता	7	डराने वाला	उस के साथ	कि होता वह	कोई फ़रिश्ता	उस के साथ	उतारा गया	क्यों न

اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ

ज़ालिम (जमा)	और कहा	उस से	वह खाता	उस के लिए कोई बाग़	या होता	कोई ख़ज़ाना	उस की तरफ़

اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۸ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ

तुम्हारे लिए	उन्हों ने बयान कीं	कैसी	देखो	8	जादू का मारा हुआ	एक आदमी	मगर-सिर्फ़	नहीं तुम पैरवी करते

الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۹ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ ع ١٦

वह जो	बड़ी बरकत वाला	9	रास्ता (सीधा)	लिहाज़ा न पा सकते हैं	सो वह बहक गए	मिसालें (बातें)

اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

बहती हैं	बाग़ात	उस से	बेहतर	तुम्हारे लिए	वह बना दे	अगर चाहे

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۱۰ بَلْ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	बल्कि	10	महल (जमा)	तुम्हारे लिए	और बना दे	नहरें	जिन के नीचे

بِالسَّاعَةِ ۚ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۱۱

11	दोज़ख़	क़ियामत को	उस के लिए जिस ने झुटलाया	और हम ने तैयार किया	क़ियामत को

معانقة ١٠ عند المتأخرين ١٢

और उन्हों ने उस के अ़लावा अपना लिए हैं और माबूद, वह कुछ नहीं पैदा करते बल्कि वह (ख़ुद) पैदा किए गए हैं, और वह अपने लिए इख़्तियार नहीं रखते किसी नुक़्सान का, और न किसी नफ़ा का, और न वह इख़्तियार रखते हैं किसी मौत का और न किसी ज़िन्दगी का, और न फिर (जी) उठने का। (3)

और काफ़िरों ने कहा यह (कुछ भी) नहीं, सिर्फ़ बहुतान है, उस (नबी स) ने इसे घड़ लिया है और इस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है, तहक़ीक़ वह आगए (उतर आए) हैं ज़ुल्म और झूट पर। (4)

और उन्हों ने कहा कि यह पहले लोगों की कहानियाँ हैं, उस ने उन्हें लिख लिया है, पस वह उस पर पढ़ी जाती हैं (सुनाई जाती हैं) सुबह और शाम। (5)

आप (स) फ़रमां दें इस को नाज़िल किया है उस ने जो आस्मानों और ज़मीन के राज़ जानता है, बेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (6)

और उन्हों ने कहा कैसा है यह रसूल! (जो) खाना खाता है, और चलता फिरता है बाज़ारों में, उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया कि वह उस के साथ डराने वाला होता। (7)

या उस की तरफ़ उतारा जाता कोई ख़ज़ाना, या उस के लिए कोई बाग़ होता कि वह उस से खाता, और ज़ालिमों ने कहा तुम पैरवी करते हो सिर्फ़ जादू के मारे हुए आदमी की। (8)

ऐ नबी (स)! देखो तो उन्हों ने तुम्हारे लिए कैसी बातें बयान कीं हैं, सो वह बहक गए हैं, लिहाज़ा वह कोई रास्ता नहीं पा सकते। (9)

बड़ी बरकत वाला है वह, अगर वह (अल्लाह) चाहे तो तुम्हारे लिए उस से बेहतर बना दे, (ऐसे) बाग़ात जिन के नीचे नहरें बहती हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (10)

बल्कि उन्हों ने झुटलाया क़ियामत को, और जिस ने क़ियामत को झुटलाया हम ने उस के लिए दोज़ख़ तैयार किया है। (11)

जब वह (दोज़ख़) उन्हें देखेगी दूर जगह से, वह उसे जोश मारता, चिंघाड़ता सुनेंगे। (12)
और जब वह उस (दोज़ख़) की किसी तगं जगह में डाले जाएंगे (बाहम ज़न्जीरों से) जकड़े हुए, तो वह वहां मौत को पुकारेंगे। (13)
(कहा जाएगा) आज एक मौत को न पुकारो, बल्कि तुम पुकारो बहुत सी मौतों को। (14)
आप (स) फ़रमां दें क्या यह बेहतर है या हमेशगी के बाग़, जिन का वादा परहेज़गारों से किया गया है, वह उन के लिए जज़ा और लौट कर जाने की जगह है। (15)
उस में उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा), हमेशा रहेंगे, यह एक वादा है तेरे रब के ज़िम्मे वाजिबुल अदा। (16)
और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और जिन की वह परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा, तो वह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया? या वह ख़ुद रास्ते से भटक गए? (17)
वह कहेंगे तू पाक है, हमारे लिए सज़ावार न था कि हम बनाते तेरे सिवा औरों को मददगार, लेकिन तू ने इन्हें और इन के बाप दादा को आसूदगी दी यहां तक कि वह तेरी याद भूल गए, और वह थे हलाक होने वाले लोग। (18)
पस उन्हों (तुम्हारे माबूद) ने तुम्हारी बात झुटला दी, पस अब न तुम (अ़ज़ाब) फेर सकते हो और न अपनी मदद कर सकते हो, और जो तुम में से ज़ुल्म करेगा, हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखाएंगे। (19)
और हम ने तुम से पहले रसूल नहीं भेजे मगर यक़ीनन वह खाते थे खाना, और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हम ने तुम में से बाज़ को बनाया दूसरों के लिए आज़माइश, क्या तुम सब्र करोगे? और तुम्हारा रब देखने वाला है। (20)

اِذَا رَاَتۡهُمۡ مِّنۡ مَّكَانٍۢ بَعِيۡدٍ سَمِعُوۡا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيۡرًا ﴿١٢﴾									
12	और चिंघाड़ती	जोश मारती	उसे	वह सुनेंगे	दूर	जगह	से	वह देखेगी उन्हें	जब
وَاِذَاۤ اُلۡقُوۡا مِنۡهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيۡنَ دَعَوۡا هُنَالِكَ									
वहां	वह पुकारेंगे	जकड़े हुए	तंग	किसी जगह	उस से-की	वह डाले जाएंगे	और जब		
ثُبُوۡرًا ﴿١٣﴾ لَا تَدۡعُوا الۡيَوۡمَ ثُبُوۡرًا وَّاحِدًا وَّادۡعُوۡا ثُبُوۡرًا									
मौतें	बल्कि पुकारो	एक	मौत को	आज	तुम न पुकारो	13	मौत		
كَثِيۡرًا ﴿١٤﴾ قُلۡ اَذٰلِكَ خَيۡرٌ اَمۡ جَنَّةُ الۡخُلۡدِ الَّتِىۡ وُعِدَ									
वादा किया गया	जो-जिस	हमेशगी के बाग़	या	बेहतर	क्या यह	फ़रमा दें	14	बहुत सी	
الۡمُتَّقُوۡنَ ؕ كَانَتۡ لَهُمۡ جَزَآءً وَّمَصِيۡرًا ﴿١٥﴾ لَهُمۡ فِيۡهَا مَا يَشَآءُوۡنَ									
जो वह चाहेंगे	उस में	उन के लिए	15	लौट कर जाने की जगह	जज़ा (बदला)	उन के लिए	वह है	परहेज़गार (जमा)	
خٰلِدِيۡنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعۡدًا مَّسۡـُٔوۡلًا ﴿١٦﴾ وَيَوۡمَ يَحۡشُرُهُمۡ									
वह उन्हें जमा करेगा	और जिस दिन	16	ज़िम्मेदाराना	एक वादा	तुम्हारे रब के ज़िम्मे	है	हमेशा रहेंगे		
وَمَا يَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ فَيَقُوۡلُ ءَاَنۡتُمۡ اَضۡلَلۡتُمۡ									
तुम ने गुमराह किया	क्या तुम	तो वह कहेगा	अल्लाह के सिवा	से	वह परस्तिश करते हैं	और जिन्हें			
عِبَادِىۡ هٰٓؤُلَآءِ اَمۡ هُمۡ ضَلُّوا السَّبِيۡلَ ﴿١٧﴾ قَالُوۡا سُبۡحٰنَكَ									
तू पाक है	वह कहेंगे	17	रास्ता	भटक गए	या वह	यह हैं-उन	मेरे बन्दे		
مَا كَانَ يَنۡۢبَغِىۡ لَنَاۤ اَنۡ نَّتَّخِذَ مِنۡ دُوۡنِكَ مِنۡ اَوۡلِيَآءَ									
मददगार	कोई	तेरे सिवा	हम बनाएं	कि	हमारे लिए	सज़ावार-लाइक़	न था		
وَلٰكِنۡ مَّتَّعۡتَهُمۡ وَاٰبَآءَهُمۡ حَتّٰى نَسُوا الذِّكۡرَ ۚ وَكَانُوۡا									
और वह थे	याद	वह भूल गए	यहां तक कि	और उन के बाप दादा	तू ने आसूदगी दी उन्हें	और लेकिन			
قَوۡمًۢا بُوۡرًا ﴿١٨﴾ فَقَدۡ كَذَّبُوۡكُمۡ بِمَا تَقُوۡلُوۡنَ ۙ فَمَا تَسۡتَطِيۡعُوۡنَ صَرۡفًا									
फेरना	पस अब तुम नहीं कर सकते हो	वह जो तुम कहते थे (तुम्हारी बात)	पस उन्हों ने तुम्हें झुटला दिया	18	हलाक होने वाले लोग				
وَّلَا نَصۡرًا ؕ وَمَنۡ يَّظۡلِمۡ مِّنۡكُمۡ نُذِقۡهُ عَذَابًا كَبِيۡرًا ﴿١٩﴾									
19	बड़ा	अ़ज़ाब	हम चखाएंगे उसे	तुम में से	वह ज़ुल्म करेगा	और जो	और न मदद करना		
وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ اِلَّاۤ اِنَّهُمۡ لَيَاۡكُلُوۡنَ									
अलबत्ता खाते थे	वह यक़ीनन	मगर	रसूल (जमा)	से	तुम से पहले	भेजे हम ने	और नहीं		
الطَّعَامَ وَيَمۡشُوۡنَ فِى الۡاَسۡوَاقِ ؕ وَجَعَلۡنَا بَعۡضَكُمۡ									
तुम में से बाज़ को (किसी को)	और हम ने किया (बनाया)	बाज़ारों में	और चलते फिरते थे	खाना					
لِبَعۡضٍ فِتۡنَةً ؕ اَتَصۡبِرُوۡنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيۡرًا ﴿٢٠﴾ ع									
20	देखने वाला	तुम्हारा रब	और है	क्या तुम सब्र करोगे	आज़माइश	बाज़ (दूसरों के लिए)			

ع ٢ ١١ ١٧